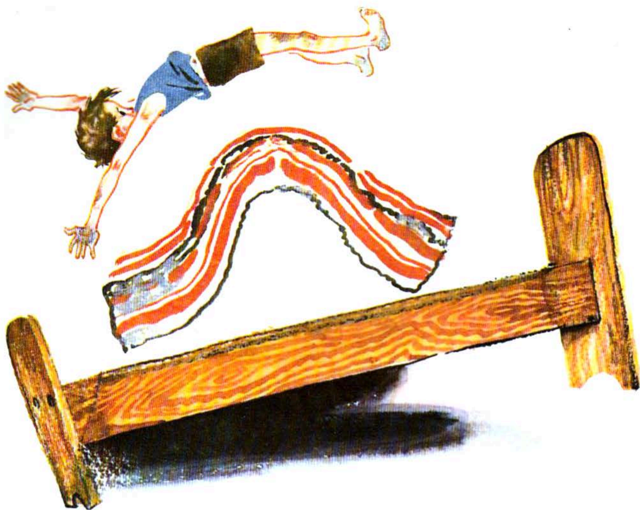
कोर्नेई चुकोव्स्की

# साबुन-पानी ज़िंदाबाद!



Books Donated by:
Mrs. Purwa Bharadwaj and Mrs. Anupama Jha





भाग चला मेरा कम्बल
वह बिस्तर से गिरा उछल,
तकिया भी कूदा झटपट
मेढक-सा फुदका नटखट।

भागी तब मेरी चादर
सिर पर अपने पग धरकर,
मैं बत्ती की ओर बढ़ा।
वह भी भागी मुझे चिढ़ा,
पुस्तक जब लेनी चाही तो
भाग चली वह भी, शैतान,
छिपी पलंग के नीचे जा कर
कौतुक देख हुआ हैरान,

पी लूं चाय, उठाये प्याला
समोवार की ओर बढ़ा,
वह तोंदल भी मुझे देखकर
भागा अपनी नाक चढ़ा।

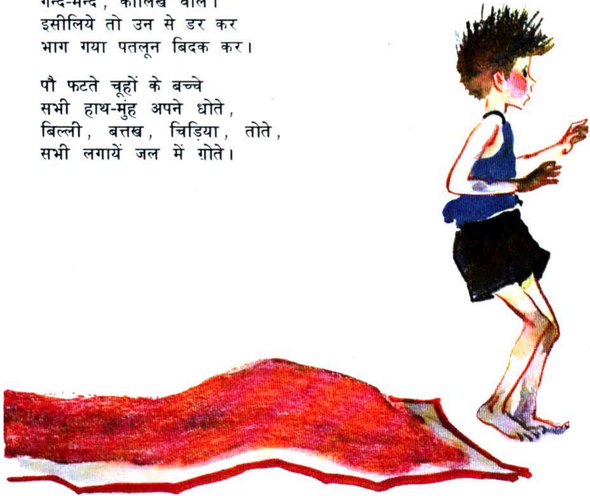
यह सब क्या है?
क्या क़िस्सा है?
यह भगदड़
यह कैसी होड़?

सब कुछ घूम रहा चक्कर में
भाग रहे सब ताबड़-तोड़ ?
इस्तरियां जूतों के पीछे,
जूते भागें आंखें मीचे
सभी खिलौने ऊपर-नीचे,
पेटी कहीं, किताबें घूमें,
जैसे सभी नशे में झूमें।

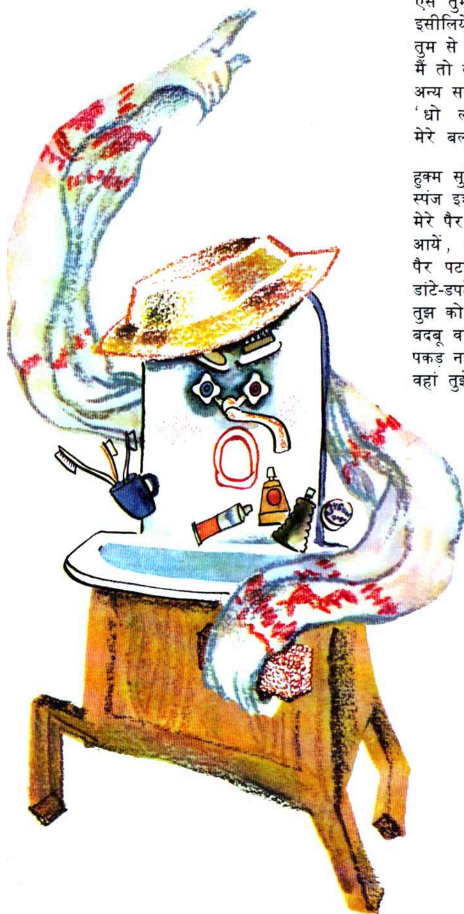


मां के सोने के कमरे से
तभी चिलमची भागी आई,
लंगड़ी, टेढ़ी टांगों वाली,
उसने आकर डांट बताई:
"अरे दुष्ट, ओ गन्दे लड़के
शर्म न तुझको बिल्कुल आती,
तन पर ढेरों मैल चढ़ाये
तुम तो हो सूअर के साथी।
दर्पण में सूरत तो देखो
गर्दन हुई मैल से काली,
जहां-तहां स्याही के धब्बे
देह कि जैसे गन्दी नाली।
हाथ कि दोनों काले-काले
गन्दे-मन्दे, कालिख वाले।
इसीलिये तो उन से डर कर
भाग गया पतलून बिदक कर।

पौ फटते चूहों के बच्चे
सभी हाथ-मुंह अपने धोते,
बिल्ली, बत्तख, चिड़िया, तोते,
सभी लगायें जल में ग़ोते।

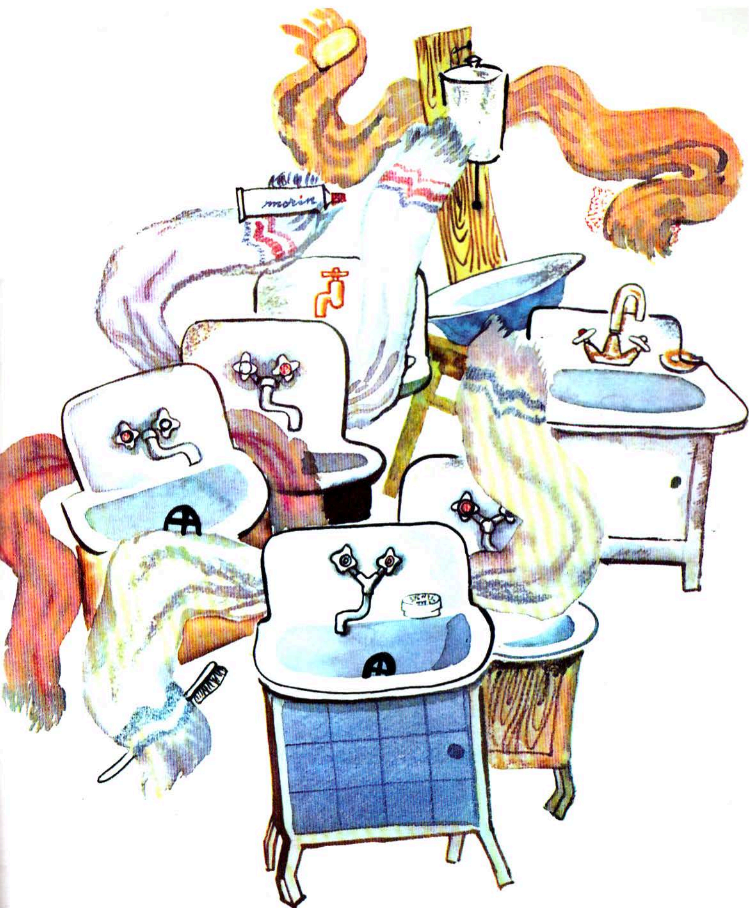






नहीं हाथ-मुंह जिसने धोया
ऐसे तुम ही एक अभागे,
इसीलिये मोज़े औ' जूते
तुम से दूर-दूर हैं भागे।
मैं तो सब से बड़ी चिलमची
अन्य सभी की मैं सरदार,
'धो लो, धो लो'–नाम है मेरा
मेरे बल का वार न पार।

हुक्म सुनें, चिलमचियां भागें
स्पंज इशारा मेरा मानें,
मेरे पैर पटकते ही वे
आयें, आकर सीना तानें।
पैर पटक तुझ को धमकायें
डांटे-डपटें, शोर मचायें,
तुझ को, गन्दे सिर वाले को
बदबू वाले, परनाले को
पकड़ नदी पर वे ले जायें,
वहां तुझे ग़ोते लगवायें।''


morin

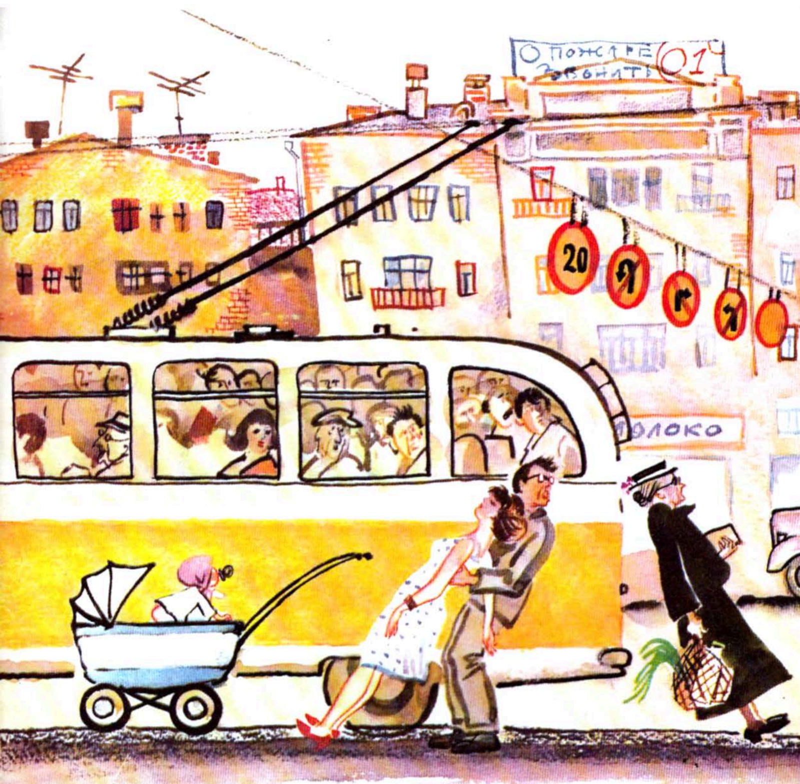
तांबे के टब पर तब उसने
बड़े ज़ोर से मुक्का मारा,
और कहा कुछ 'कारा-बारा'।

उसी समय ब्रश भागे आये,
मेढक-से टर्राते आये,
रगड़-रगड़ मुझको नहलायें
और साथ यह गाते जायें:

"हम इस गन्दे-मन्दे को
करते साफ़-साफ़,
तन निखरे, मुंह चमके इसका
करते साफ़-साफ़।"

साबुन की टिकिया झट आई,
उसने सिर पर धौल जमाई।
चुटकी काटे, फेन सताये
सुने न मेरी हाये-वाये,

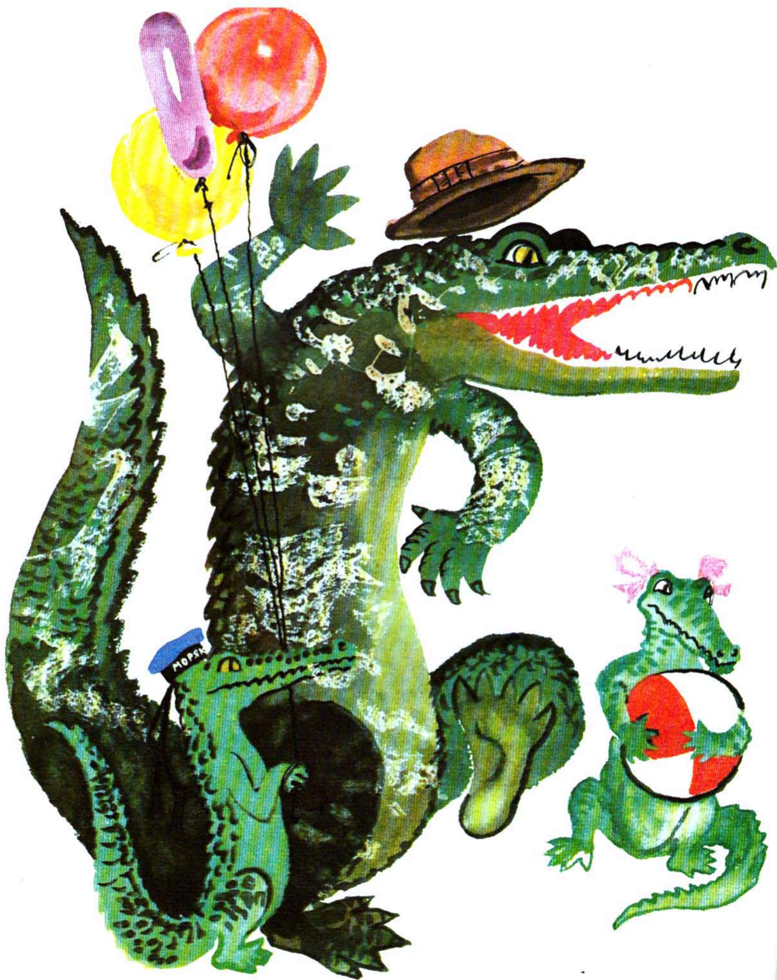





वह पागल, स्पंज मुस्टंडा।
मुझे डराये, जैसे डंडा,
उस से डर कर भाग चला
पर वह ज़ालिम नहीं टला,



मैं दायें, तो वह दायें
मैं बायें, तो वह बायें,
लांघ गया मैं बाड़ मगर
झपटा वह फिर भी मुझ पर,


МОРЯК

उसी समय घड़ियाल मित्र
वह मेरा प्यारा-प्यारा,
बच्चों के संग पड़ा दिखाई
उसने मुझे उबारा,
उसने झट स्पंज को निगला
वह हलवे-सा मुंह में पिघला,

फिर वह मुझे देख चिल्लाया
पैर पटकता भागा आया,
"जाओ, फ़ौरन, जाओ घर
वह बोला!
मुंह को धोओ मल मल कर
वह बोला!
वरना अक़्ल सिखाऊंगा
वह बोला!
पीटूंगा, खा जाऊंगा
वह बोला!"



भाग चला मैं तब सरपट
वापस आया घर झटपट,
मल मल साबुन
मल मल साबुन
बहुत देर तन साफ़ किया,
धब्बे धोये
स्याही धोयी
मुंह का मैल उतार दिया।



अब पतलून भागता आया
"पहनो मुझको," वह चिल्लाया,
तभी समोसा बोला आकर।
"मुंह में रख लो, मुझे उठाकर,"
नारंगी भी दौड़ी आई
सीधे मुंह के बीच समाई।
लौटी अब पुस्तक भी मेरी
कापी भी आई वापस,
गणित, व्याकरण झूमे खुश हो
नाच उठे दोनों बरबस।



इसी समय वह बड़ी चिलमची
अन्य सभी की जो सरदार,
'धो लो, धो लो' नाम है जिसका
जिसके बल का वार न पार,
भागी आई मुझे चूमती,
नाच नाचती और झूमती,
बोली: "तुम कितने सुन्दर हो
अब तुम मुझे बहुत प्यारे हो;
सब की आंखों के तारे हो।"
हर दिन, हर दिन सुबह-शाम को
तन की करो सफ़ाई,
वरना सभी दूर भागेंगे
निश्चय मानो भाई।
गन्दे बच्चों से सब कहते:
"शर्म, शर्म, शर्म,"
सब के ताने-बोली सहते
"शर्म, शर्म, शर्म।"
खुशबू वाला प्यारा-प्यारा
साबुन ज़िन्दाबाद!
फूला-फूला नर्म तौलिया
वह भी ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद रहे दांतों का बढ़िया
मंजन,
ज़िन्दाबाद रहे आंखों का बढ़िया अंजन।

तालाबों में, नद-नदियों में
आओ, चलें नहायें,

सागर की लहरों से खेलें
तैरें, मौज मनायें।
नल-टोंटी के नीचे बैठें
घर में स्नान करें,
पानी ज़िन्दाबाद कि उससे
तन का ताप हरें।



अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : ये० मेश्कोव

К. Чуковский
МОЙДОДЫР
*На языке хинди*

K. Chukovsky
WASH'EM CLEAN
*In Hindi*






रादुगा प्र[illegible]न
मास्को


पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५


राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





ISBN 5-05-002338-6